

हिन्दी विभाग

महादेवी वर्मा जयंती

26 मार्च 2024

महाविद्यालय खरसिया का हिन्दी विभाग रंग त्यौहार होली के अवसर पर भी कवि जयंती को नहीं भूला। एम ए हिन्दी के पाठ्यक्रम में समाहित छायावादी कवयित्री आधुनिक काल की मीरा, वेदनामय महादेवी वर्मा की जयंती को हिन्दी विभाग के छात्रों ने होली के अगले दिवस दिनांक 26 मार्च 2024 को विभाग में पूर्ण सादगी के साथ मनाया। विभागाध्यक्ष हिन्दी डॉ० रमेश टण्डन, प्रो० कुसुम चौहान एवं प्रो० अंजना शास्त्री की गरिमामय उपस्थिति एवं उद्बोधन में छात्र रोहित चन्द्रा, छाया डनसेना, छाया राठौर, अमनराज, रुखमणी राठिया, हेमलता बैगा, जयप्रकाश, पंकज डनसेना, देविका राठिया, लीलाधर राठिया, भूपेन्द्र राठिया, शशिकला महंत, गौरव राठौर, अंचल पटेल आदि ने व्याख्यानपूर्ण जयंती का ज्ञान लाभ लिया। अपने उद्बोधन में प्रो० शास्त्री ने महादेवी वर्मा के सन्यासी जीवन के बारे में बताते हुए कहा कि कई पीढ़ियों के बाद इनका जन्म होने के कारण परिवार में हर्ष व्याप्त था, इसीलिए इनका नाम देवी अर्थात् महादेवी रखा गया। डॉ० टण्डन ने अपने वक्तव्य में कहा — महादेवी वर्मा के प्रियतम हल्की—सी झलक दिखाकर चले जाते हैं जिसके परिणामस्वरूप इनका मन मधुमय पीड़ा में डूबकर रह जाता है—

“इन ललचाई आँखों पर
पहरा था जब ब्रीड़ा का,
साम्राज्य मुझे दे डाला

उस चितवन ने पीड़ा का।”

अपनी प्रथम कृति ‘नीहार’ के संबंध में महादेवी लिखती हैं कि ‘नीहार’ के रचना काल में मेरी अनुभूतियों में वैसी ही कौतूहल मयी वेदना उमड़ आती थी, जैसी बालक के मन में दूर दिखाई देने वाली अप्राप्य सुनहली उषा और स्पर्श से दूर और सजल मेघ के प्रथम दर्शन से उत्पन्न हो जाती है। कवयित्री के लाज के बोल भी नहीं फूटे थे, प्रियतम के स्वरूप का बोध भी नहीं हुआ था; इस दशा में वियोग की पराकाष्ठा पर पहुँचकर कवयित्री को पूरा विश्व वेदनामय प्रतीत होने लगा था —

“अपने इस सूनेपन की
मैं हूँ रानी मतवाली,
प्राणों का दीप जलाकर
करती रहती दीवाली।”

प्रथम कृति ‘नीहार’ में प्रत्येक वस्तु कुहासे से ढकी होने के कारण धूमिल और अस्पष्ट होती है। किन्तु प्रातःकाल हो जाने से ‘रश्मि’ के प्रकाश में वही वस्तु प्रकट हो जाती है। इस कृति में कवयित्री को वेदना से विशेष आत्मीयता हो जाती है। रश्मि तक आते—आते विरह—वेदना ही कवयित्री का अंतिम लक्ष्य बन जाती है। ‘रश्मि’ के बाद की दो कृतियों — ‘नीरजा’ और ‘सांध्यगीत’ का स्वर एक जैसा है। इनमें वेदना से आनन्द की अनुभूति होने लगती है। कवयित्री दुःख के रूप में ही प्रियतम का आह्वान करती है —

‘तुम दुःख बन इस पथ से आना ?

शूलों में नित मृदु पाटल—सा, खिलने देना मेरा जीवन,
क्या हार बनेगा वह, जिसने सीखा हृदय को बिंधवाना।’

महादेवी ने वेदना को आनन्द से सर्वथा ऊँचा स्थान दिया है। ‘सांध्यगीत’ में महादेवी का साथी केवल अन्धेरा ही है —

‘शून्य मेरा जन्म था, अवसान है केवल सवेरा।’



GPS Map Camera

Kharsia, Chhattisgarh, India

X4H6+GWW, Thakurdiya, Kharsia, Chhattisgarh 496661, India

Lat 21.978778°

Long 83.112456°

26/03/24 01:29 PM GMT +05:30

Google

हिंदी विभाग ने वेदना की कवयित्री महादेवी वर्मा की मनाई जयंती

विभागीय छात्राओं लक्ष्मणी राठिया और हेमलता बैगा का भी जन्म दिवस मनाया।

खबरिया » दर्जन रिपोर्ट

महाविद्यालय शुरूसिया का हिन्दी विभाग रोग त्वेहर हल्ली के अवसर पर भी कवि जयंती को नहीं भूला। एम ए हिन्दी के पाठ्यक्रम में समाहित छायाचारी कवयित्री आधुनिक कलाएँ भी भौंगा, वेदनामय महादेवी वर्मा की जयंती को हिन्दी विभाग के छात्रों ने होटल के अगले दिवस दिनांक 26 मार्च 2024 को विभाग में पूर्ण सादगी के साथ मनाया। विभागाध्यक्ष हिन्दी डॉ० रमेश टपडन, प्र०० कुमुम चैहाम एवं प्र०० अंजना शास्त्री वही गरिमामय उपस्थिति एवं उद्घोषन में छात्र रोहित चन्द्रा, छात्रा डनसेना, छात्रा राठोर, अमनराज, लक्ष्मणी राठिया, हेमलता बैगा, जयप्रकाश, पंकज डनसेना, देविका राठिया, लीलाभर राठिया, शुभेन्दु राठिया, शशिकला महान, गोरक्ष राठोर, अंचल पटेल आदि ने व्याख्यानपूर्ण जयंती का ज्ञान लाभ लिया। संवेदन से उक्त शिक्षियों को एम ए चतुर्वर्ष सेमेस्टर हिन्दी की छात्राएँ, लक्ष्मणी राठिया और हेमलता बैगा का जन्म दिवस था। दोनों बालिकाओं का जन्म दिन भी अस्थनत हर्ष के साथ केक काटकर मनाया गया।

अपने उद्घोषन में प्र०० शास्त्री ने महादेवी वर्मा के मन्यासी जीवन के बारे में बताते हुए कहा कि कई पीढ़ियों के बाद इनका जन्म होने के कारण परिवार में हर्ष व्याप



था, इसीलिए, इनका नाम देवी अर्थात् महादेवी रखा गया। डॉ० टपडन ने अपने वक्तव्य में कहा - महादेवी वर्मा के प्रियतम हल्की-सी झलक दिखाकर चले जाते हैं जिसके परिणामस्वरूप इनका मन मधुमय पीड़ा में दुबकर रह जाता है-

इन ललचाई और्खों परपहरा था जब बीड़ा बरसायाज मुँझे दे डालाडास चितवन ने पीड़ा का।

अपनी प्रथम कृति नीहार के संबंध में महादेवी लिखती है कि नीहार के रचना काल में मेरी अनुभूतियों में वैसी ही व्यंतुहल मवी वेदना उमड़ आती थी, जैसी बस्तु प्रकट हो जाती है। इस कृति में कवयित्री जो वेदना के बालक के मन में दूर दिखाई देने वाली अप्राप्य मुनहली उपा और स्पृश्य से दूर और सजल बेघ के प्रथम दर्शन से

उत्पन्न हो जाती है। कवयित्री के लाज के बोल भी नहीं पूछे थे, प्रियतम के स्वस्य का बोध भी नहीं हुआ था। इस दृश्य में विदेशी की पराकाष्ठा पर पहुँचकर कवयित्री को पूरा विश्व वेदनामय प्रतीत होने लगा था।

अपने इस सूनेपन की मैं हूँ राती मतवाली,
प्राणों का दीप जलाकर करती रहती दीवाली।

प्रथम कृति नीहार में प्रत्येक वस्तु कुहसे से ढकी होने के कारण शूमिल और अस्पष्ट होती है। किन् प्रातःज्ञान हो जाने से रश्मि के प्रक्षाश में वही वस्तु प्रकट हो जाती है। इस कृति में कवयित्री जो वेदना के विशेष आत्मीयता हो जाती है। रश्मि तक आते-आते विश्व-देवना ही कवयित्री का अतिम लक्ष्य बन जाती है-

सुकली में न्योता भोज का

मतदाताओं को जागरुक करने नागरिकों ने लग